मासिक
इसलाहे समाज
फरवरी **2018** वर्ष **29** अंक **02**

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	**100** रुपये
❑	प्रति कापी	**10** रुपये
❑	टोटल पेज	**28**

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. उपदेश **2**

2. स्वर्ग की राह **4**

3. राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में प्रचारकों एवं सुधारकों की भूमिका **6**

4. अल्लाह निसन्देह निशानियां दिखाने की शक्ति रखता है **10**

5. मानव अधिकार इस्लाम की शिक्षाओं की रोशनी..**11**

6. हमेशा अपने दिल को नमाज़ से जोड़े रखो **14**

7. पड़ोसी के अधिकार **15**

8. दिखावा महा पाप **16**

9. देहली चले चलो सब देहली चले चलो सब **18**

10. सूए देहली चलो मुस्कुराते चलो **20**

11. राष्ट्रीय सदभावना और मरीज़ों की ... **22**

12. हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया **24**

13. क़ुरआन को पढ़ने और समझने के साथ अमल...**26**

14. मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़ **27**

15. ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स **28**

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

स्वर्ग की राह

नौशाद अहमद

मौत दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई है, इस हकीकत का एतराफ दुनिया का हर व्यक्त करता है, जीवन इस संसार के पालनहार की एक नेमत है जो आजमाइश का भी माध्यम है, ईश्वर इन्सान को दुनिया की विभिन्न कठिनाइयों में आजमाता है, संसार के जीवन में इन्सान को सुख और दुख के दौर से गुजरना पड़ता है, लेकिन इस दुनिया में किसी इन्सान की सही पहचान उसके कर्मों से होती है।

सत्य और असत्य दुनिया का दो रूप है सत्य की राह पर चलने से इन्सान की प्रशंसा होती है, उसके लिये आख़िरत (परलय) के सुखद जीवन का रास्ता प्रशस्त होता है, अल्लाह कुरआन में स्पष्ट शब्दों में कहता है ''ताकि तुम्हें हम आजमायें कि तुम में से कर्म के एतबार से अच्छा कौन है'' इन्सान इस दुनिया में यूं ही बेकार नहीं पैदा किया गया है, उसको अक्ल दी गयी है कि वह अच्छे और बुरे में अन्तर करे अपने ईश्वर की उपासना करे, सहीह और गलत में अन्तर करके और सहीह रास्ते पर चल कर ही इन्सान अपने पालनहार का प्रिय बन सकता है, इसलिये ईश्वर ने इन्सान को जो रास्ता बताया है उसी के अनुसार अपने जीवन को गुजारे, क्योंकि अल्लाह की तरफ से बताया गया रास्ता ही किसी इन्सान को स्वर्ग की तरफ ले जाता है। अगर कोई इन्सान अपने मन के अनुसार रास्ता तलाश करे गा तो वह उस गंतव्य तक नहीं पहुंच सकता जो एक इन्सान के जीवन का मूल आधार है अर्थात मरने के बाद सफलता। यह सफलता उसी समय मिलेगी जब वह अपने पालनहार के बताये गये तरीके और नियम के अनुसार कर्म करेगा। एक इन्सान जीवन कैसे गुजारेगा, और उसकी सफलता की कसौटी क्या है, स्वर्ग की राह कैसे प्रशस्त हो सकती है और नरक से कैसे बचा जा सकता है? इन सब बातों का समाधान ईश्वर के बताये गये नियम में है क्योंकि इन्सान की मुक्ति के बारे में अगर सहीह अर्थों में कोई अथार्टी का हक रखता है तो वह इस संसार के पालनहार के पास है जो हर प्रकार की कमियों और खामियों से पवित्र है, जो अपने बन्दे की कामयाबी चाहता है।

सत्कर्म करने से अल्लाह खुश होता है और कुकर्म करने से नाराज़ होता है। यह जीवन

आजमाइश है, किसी के जीवन के अन्त का कोई समय सीमा नहीं है। कवि कहता है:

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं

सामान सौ बरस का है पल की खबर नहीं।

इसलिये इस आज़माइश वाले जीवन में सत्कर्म के जरिये अपने परलय के जीवन को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिये, और ऐसे कर्म से बचना चाहिये जो हमें नरक की तरफ ले जाता है।

अल्लाह का सिद्धांत:

विवेक की खूबी यह है कि वह हर इन्सान को बताता है कि हम जो कुछ कर रह हैं या करने जा रहे हैं वह सहीह है या गलत सहीह और गलत के आधार पर इन्सान की पहचान होती है। सहीह काम करने वाला इन्सान की नज़र में अच्छा माना जाता है और अपने पालनहार की निगाह में भी वह अच्छा है। यह अच्छे कर्म की तरफ संकेत और इशारा है जब इन्सान को यह मालूम हो गया कि उसके अच्छे कर्म करने से इन्सान खुश होता है और अल्लाह भी खुश होता है तो फिर गलत काम क्यों किया जाये।

इसी प्रकार से इन्सान का विवेक यह निर्देश देता है कि गलत काम हर हाल में गलत है और यह अल्लाह की निगाह में भी गलत है, तो फिर हर किसी को भी गलत कामों से दूर रहना चाहिये क्योंकि गलत काम से इन्सान की बदनामी होती है और वह अपने पालनहार की निगाह में भी गलत माना जाता है।

इन्सान अपने विवेक के साथ अल्लाह के उस सिद्धांत को भी सामने रखे जो उसे केवल सीधे रास्ते की तरफ ले जाता है। अल्लाह ने स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि इन्सान का कौन सा कर्म उसे सफलता की तरफ ले जाता है और कौन सा कर्म उसे असफलता की तरफ ले जाता है, यह सिद्धांत उस पालनहार का बनाया हुआ है जो हर प्रकार के अवगुण से पवित्र है उसके सिद्धांत में किसी प्रकार की कोई कमी और खामी नहीं है, उसमें किसी प्रकार के बदलाव की भी ज़रूरत नहीं है क्योंकि उसका सिद्धांत इतना मज़बूत और ठोस है कि उसमें कमी और खामी आने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता है।

जब अल्लाह के सिद्धांत के बारे में हम तमाम इन्सानों को यह मालूम है कि किसी प्रकार की कोई कमी और अवगुण नहीं है तो फिर हमें अपने विवेक का प्रयोग करते हुये सहीह गलत के फर्क को समझना चाहिये और शाश्वत सफलता पाने के लिये हमें उसी अल्लाह के सिद्धांतों का पालन करना चाहिये जो हमें केवल सफलता का रास्ता बताता है और अपने मन के उस सिद्धांत से बचना चाहिये जो हमें सहीह मानों में सफलता की तरफ नहीं ले जाता।

राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में प्रचारकों एवं सुधारकों की भूमिका

अब्दुल मुबीन फैज़ी

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

इसी प्रकार हर धर्म की यह आस्था है कि इन साधारण मानवीय मूल्यों में जो नेकियाँ हैं वह इन्सान की श्रेष्ठता की कसौटी हैं और जो बुराइयां हैं वह इन्सान के स्तरीय होने की निशानी हैं। इन्सान अच्छे काम करके महान बनता है और बुरे काम करके कमतर और अपमानित हो जाता है।

इसी प्रकार हर धर्म में अगर्चे उपासना और पूजा पाठ के तरीके अलग अलग हैं लेकिन किसी धर्म के मानने वाले को उसके अपने तरीके पर उपासना करने को किसी धर्म ने बुरा नहीं कहा है और न ही परिवारिक जीवन के अन्दर अपने धार्मिक शैली के अनुसार अमल करने से किसी धर्म ने रोका है तो जब हमारे देश में बहुत से धर्मों के होते हुये भी इन तमाम धर्मों के अन्दर ऐसी शिक्षाएं मौजूद हैं जिन की बुनियाद पर आपस में एकता हो सकती है और इस देश के सभी वासी चाहे वह किसी भी धर्म के मानने वाले हों अपने धर्म पर अमल करते हुये भी एक बेहतरीन समाज गठित कर सकते हैं और आपस में मिल जुल कर अपने प्रिय देश की सुरक्षा और उसके निर्माण एवं विकास में साझेदारी कर सकते हैं तो फिर राष्ट्रीय सदभावना और देश से प्रेम का हवाला देकर इस देश के बाज वासियों से किसी और चीज़ की मांग करना या अपनी शिक्षाओं से विरक्त (दस्तबरदारी) की मांग करना या यह कहना कि जब तक सभी लोग एक धर्म की शिक्षाओं को न मानें या यह कि जब तक तमाम लोग अपने प्रस्नल ला को छोड़ करके समान संहिता (कामन सिवल कोड) को न स्वीकार कर लें, उन्हें राष्ट्रीय धारा में शामिल नहीं माना जा सकता यह एक व्यर्थकार्य बल्कि शर अंगेज़ी के अलावा कुछ नहीं है।

जहां तक इस्लाम की शिक्षाओं की बात है तो वह संसार का ऐसा धर्म है जिसके अन्दर सहिष्णुता और उदारता सबसे ज़्यादा है यही वजह है कि इस्लाम की बुनियादी शिक्षा यह है कि इन्सान इस बात का इकरार करे कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है और मुहम्मद स०अ०व० उसके सन्देष्टा हैं। यह माने बिना कोई शख्स इस्लाम में दाखिल नहीं हो सकता गोया कि इस्लाम में दाखिल होने के लिये यह पहली सीढ़ी है और इसी प्रकार का सबसे बुरा काम यह है कि अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाया जाये। यह काम इस्लाम में इतना बुरा है कि कोई इसी (शिर्क की हालत) में मर जाये तो उस के लिये मुक्ति का दरवाज़ा बन्द है क्योंकि अल्लाह ने ऐसे शख्स को मआफ न करने का एलान कर रखा है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''निसन्देह अल्लाह तआला अपने साथ शरीक किये जाने को

नहीं मआफ़ करता और इसके सिवा जिसे चाहे मआफ कर देता है और जो अल्लाह के साथ साझीदार बनाये उसने बहुत बड़ा पाप और बोहतान (झूठा आरोप) बांधा'' (सूरे निसा-४८)

ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस इस्लाम में शिर्क को इतना बुरा काम कहा गया है जिसके करने वाले के लिये मआफ न करने का एलान किया गया है इसी इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को यह शिक्षा भी दी है कि अल्लाह के साथ जिन पूज्यों को दूसरे लोग साझीदार ठहराते हैं उनको गाली मत दो बल्कि उनको उनके हाल पर छोड़ दो और उनका मामला अल्लाह के हवाले कर दो। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''और गाली मत दो उनको जिन की यह लोग अल्लाह को छोड़ कर उपासना करते हैं क्योंकि वह अज्ञानता में सीमा से गुजर कर अल्लाह की शान में दुष्टता करेंगे, हमने इसी प्रकार हर तरीका वालों के लिये इनका कर्म प्रिय बना रखा है फिर अपने पालनहार के पास उनको जाना है फिर वह उन को बतला देगा जो कुछ वह किया करते थे''।(सूरे अंआम-१०८)

इसी प्रकार इस्लाम वह धर्म है जिसके बारे में अल्लाह का यह एलान है कि ''बेशक अल्लाह के नजदीक दीन इस्लाम ही है'' (आल इमरान-१९) इसके बावजूद अल्लाह ने दीन को किसी पर जबरदस्ती थोपने की इजाज़त नहीं दी स्पष्ट शब्दों में यह एलान किया कि ''दीन (धर्म) के बारे में कोई जबरदस्ती नहीं है, सीधी राह पथभ्रष्टता से रोशन (अलग) हो चुकी है इसलिये जो शख्स अल्लाह के सिवा दूसरे पूज्यों को इन्कार करके अल्लाह पर ईमान लाये उसने मज़बूत कड़ी को थाम लिया जो कभी न टूटेगी और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है''। (सूरे बक़रा-२५६)

इसी प्रकार से जहां तक परिवारिक जीवन और प्रसनल्ला की बात है तो इतिहास के पन्ने साक्षी हैं कि इस्लाम शुरू ही से इस्लामी सीमाओं में रहने वाले लोगों को कभी इस बात पर मज़बूर नहीं किया गया कि वह अपने सांसकृति को छोड़ कर इस्लाम की सभ्यताओं को अपनायें बल्कि उन्हें पूरी आज़ादी रही कि वह अपने तरीके के अनुसार जीवन गुज़ारें इस प्रकार के बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं लेकिन इस संक्षिप्त लेख में इसका विवरण देना संभव नहीं।

इस्लाम के अलावा दूसरे ध र्मों के अन्दर भी थोड़ी-बहुत ऐसी शिक्षाएं तो मौजूद हैं कि उनके मानने वाले दूसरे धर्मों के अनुयाइयों के साथ मिल जुल कर कैसे रह सकते हैं और हर धर्म ने नैतिक और समाजी मूल्यों को भी उजागर किया है जैसा कि मैंने इस लेख के शुरू में संकेत किया है इसलिये अगर हम अपने देश का निर्माण एवं विकास चाहते हैं और हम यह चाहते हैं कि इस देश के वासी अम्न व चैन और शान्ति के साथ जीवन गुज़ारें तो सभी धर्मों के गुरूओं और सुधारकों के लिये ज़रूरी है कि यह अपने धर्म की इन बुनियादी शिक्षाओं को साध ारण करें जो मानवीय मूल्यों की जमानत लेती हैं, इसी प्रकार से सभी धर्मों के ओलमा और धर्म गुरू मिल कर ऐसा प्रोग्राम बना सकते हैं कि सब अपने मानने वालों को इस बात का उपदेश दें कि वह अपने धर्म की सीमा में

रहें और अन्य धर्म के मानने वालों से कदापि कोई ऐसी मांग न करें जो उनके धर्म की शिक्षाओं के विरूद्ध हो या इसी तरह अगर किसी धर्म के मानने वाले अपने धर्म के अनुसार अमल कर रहे हैं और दूसरे धर्म से कोई छेड़छाड़ नहीं करते तो वह ऐसी ही उदारता का सुबूत दें। हर एक ज्ञानी और धर्मगुरू अपने धर्म की अच्छाई और खूबी को बयान करे लेकिन किसी दूसरे धर्म के अन्दर अकारण मीनमेख न निकाले और उसकी बुराई न करे। मुझे पूरा विश्वास है कि इस देश के अन्दर विभिन्न धर्मों के प्रचारक और सुधारवादी लोग अगर सहीह अर्थों में इसकी जिम्मेदारी ले लें और लोगों के बीच भलाई और सौहार्द की भावना के साथ जायें तो सकारात्मक परिवर्तन आते देर नहीं लगे गी और देश के सभी वासी एक दूसरे के साथ सौहार्दपूर्ण जीवन गुज़ारें गे फिर न तो किसी को किसी से शिकायत होगी और न किसी को किसी से कोई भय क्योंकि धर्म तो वास्तव में लोगों को जोड़ने का काम करते हैं न कि तोड़ने का जहां तक इस्लाम की बात है इसकी शिक्षाएं तो शुरू से ही इससे भरपूर रही हैं और इतनी स्पष्ट हैं कि अपने तो अपने अन्य भी इसको स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते।

इस बारे में एक उदाहरण पढ़िये यह उस समय की घटना है जब मक्का विजय नहीं हुआ था। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने दूसरे देशों के बादशाहों को पत्र भेजने का सिलसिला जारी किया था इसी बारे में एक पत्र रूम के बादशाह हिरक्ल के पास भी भेजा था। हिरक्ल ने पत्र के विषय को पढ़ने से पहले उचित समझा कि पत्र भेजने वाले के बारे में जानकारी हासिल करे, जब बादशाह को पता चला कि कुरैश के सरदार, अबू सुफियान जो अभी मुसलमान नहीं हुये थे, वह शाम में व्यापार के मकसद से यात्रा पर थे, इनको हिरक्ल बादशाह ने अपने दरबार में बुलवाया और ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। बादशाह ने अबू सुफियान से जो सवालात किये थे उनमें एक सवाल यह भी था कि हज़रत मुहम्मद सबको किस बात का हुक्म देते हैं अबू सुफियान ने जवाब दिया कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद हमें नमाज़ पढ़ने, पवित्रता और रिश्ता नाता बनाये रखने का हुक्म देते हैं और हज़रत मुहम्मद रिश्ता नाता जोड़े रखने का जो हुक्म देते हैं तो इसमें किसी भी तरह का भेदभाव नहीं, अर्थात हर वर्ग के साथ रिश्ता नाता जोड़े रखना है। एक बार अबू सुफियान कहतसाली (अकाल) के जमाने में ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के पास आये और इसी रिश्तेदारी का हवाला देकर आपसे बारिश के लिये दुआ का अनुरोध किया और आप ने बारिश के लिये दुआ की।

इसी प्रकार ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपने व्यवहार से भी यह शिक्षा दी कि हम जिस जगह को वतन की हैसियत से अपनायें उसकी सुरक्षा के लिये वहां के वासियों के साथ मिल कर बेहतरीन उपाय करें अगर्चे वह किसी दूसरे धर्म के मानने वाले हों, जब मुसलमान मक्का से हिजरत करके मदीना पहुंचे और थोड़ी मुददत के बाद स्वयं ईश्दूत हज़रत मुहम्मद ने भी मदीना को अपना वतन बना लिया

तो आपने वहां के वासियों से इस बात पर संधि (समझौता) किया कि अगर कोई दुश्मन मदीना पर हमला करेगा तो हम सब मिल कर उससे मुकाबला करेंगे चाहे इस बाहिरी दुश्मन के हमले का सबब मदीना की कोई भी कम्यूनिटी हो, इस प्रकार ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने अपने वतन की सुरक्षा के लिये संयुक्त प्रोग्राम बनाया जब कि मदीना में आबाद लोगों में विभिन्न धर्मों के मानने वाले मौजूद थे यह और बात है कि मदीना के यहूदियों ने इस संधि का पालन नहीं किया।

सारांश यह है कि धार्मिक शिक्षाएं राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने में न केवल सहायक साबित हो सकती हैं बल्कि मज़बूत आधार उपलब्ध करती हैं इसलिये धार्मिक मार्गदर्शक, धर्मगुरू, सत्य के प्रचारक, धर्म प्रचारक अपने प्रयासों के द्वारा यह काम भली भांति कर सकते हैं और लोगों के अन्दर राष्ट्रीय सदभावना की भावना पैदा कर सकते हैं और लोगों को बता सकते हैं कि वह अपनी ध ार्मिक शिक्षाओं को अपनाते हुये दूसरों के धर्मों का सम्मान करें और मानवीय और समाजी मूल्यों को अपनायें और समाजी बुराइयों को छोड़ दें रिश्वत खोरी, घोटाला और इस प्रकार की बुराइयों से बचें और इस देश में बसने वाले तमाम इन्सानों को यहां का वास्तविक वासी मानें और उतना ही उसे भी इस देश का हकदार स्वीकार करें जितना स्वयं को समझते हैं। मुझे विश्वास है कि अगर धार्मिक मार्गदर्शक और धर्म प्रचारक यह काम सच्चे मन के साथ करें तो इसके अच्छे परिणाम निकलेंगे। (पाक्षिक जरीदा तर्जुमान, १६-३१ मार्च २०१७)

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

अल्लाह निसन्देह निशानियां दिखाने की शक्ति रखता है

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह०
स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री भारत सरकार

''और उन्होंने कहा क्यों उसके परवर दिगार की तरफ से कोई निशानी उस पर नहीं उतारी गयी? (ऐ ईश्दूत) कह दो अल्लाह निसन्देह इस पर कादिर है कि एक निशानी उतार दे लेकिन अकसर आदमी ऐसे हैं जो (हकीकते हाल नहीं) जानते और (देखो) जमीन में चलने वाला कोई हैवान और हवा में परों से उड़ने वाला कोई परिन्द ऐसा नहीं जो तुम्हारी तरह उम्मतें न रखता हो (अर्थात तुम्हारी तरह इन में से हर गरोह अपनी अपनी मईशत और अपना अपना सरो समाने कार न रखता हो) हमने नविश्ते में कोई बात भी फिरोगुज़ाश्त नहीं की (अर्थात कायनात की हर मखलूक के लिये जो कुछ होना चाहिये था वह सब कुछ उसके लिये लिखा दिया, किसी मखलूक के लिये फिरोगुजाश्त नहीं हुयी) फिर सब बिलआखिर अपने परवर दिगार के हुजूर जमा किये जायेंगे (कि आखिरी मरजअ् वही है)

और (देखो!) जिन लोगों ने हमारी आयतें झुठलायीं (तो उनका हाल ऐसा हो गया है गोया) बहरे गूंगे तारीकियों में गुम हों। अल्लाह जिस पर चाहे राह (कामयाबी) गुम कर दे और जिसे चाहे कामयाबी की सीधी राह पर लगा दे। (उसने इस बारे में जो कानून ठेहरा दिया है तुम उसे बदल नहीं सकते) सूरे अन्आम, आयत न. ३७,३८,३९

व्याख्याः जो लोग निशानियां मांगते हैं उनके जवाब में फ़रमाया अल्लाह निसन्देह निशानियां दिखाने की शक्ति रखता है और उसने निशानियां दिखला भी दी हैं लेकिन बहुत कम हैं जो इन्हें समझते हों।

अगर तुम निशानियों की ढूंढ में हो तो बताओ पूसे संसार की सृष्टि में जो कुछ मौजूद है वह क्या है? तमाम फेजाए हस्ती (संसार) जिन आश्चर्य जनक अचंभों से भरी हुयी है इनके लिये तुम्हारी बोली में कौन सा नाम है? यह उसकी हस्ती और खूबियों की निशानियां नहीं हैं तो और क्या हैं? जमीन के तमाम जानवरों को देखो जो तुम्हारे कदमों के पास हैं हवा के परिन्दों को देखो जो तुम्हारे चारों तरफ़ उड़ रहे हैं, किस तरह हमने तुम्हारी ही तरह उनकी भी उम्मतें बना दी हैं, हर उम्मत अपनी पैदाइश अपनी मईशत (रोज़गार) और अपनी जिन्दगी की आवश्यकताओं के लिये एक जीवन विधान रखती है। इसलिये जो लोग ज्ञान और बुद्धिमत्ता रखने वाले हैं उन्हें सहीफ-ए-फितरत की निशानियों के बाद और किसी निशानी की ज़रूरत नहीं हो सकती।

लेकिन जिन लोगों ने अल्लाह की दी हुयी अक्ल व बीसरत ताराज कर दी और गूंगे और बहरे होकर तारीकियों (अंधेरों) में गुम हो गये तो उनके लिये कोई निशानी भी सूदमन्द (लाभप्रद) नहीं, क्योंकि जो आदमी गूंगा और बहरा हो और तारीकी में खो गया तो उसे क्यों कर राह मिल सकती है। तुम उसे राह दिखाने के लिये पुकारो तो सुनेगा नहीं, खुद पुकारना चाहे तो पुकार सकता नहीं। हां यह हो सकता है कि कोई चीज़ जबरन उठाकर रोशनी में ले आये तो हिदायत (मार्गदशन) ऐसी चीज़ नहीं जो जबरन (जबरदस्ती, बलपूर्वक) किसी के हलक़ में ठोंस दी जाये। (साभारः तर्जुमानुल कुरआन पृष्ठ ७१६-७१९ भाग-२)

मानव अधिकार इस्लाम की शिक्षाओं की रोशनी में

डा० मुहम्मद तैयब शम्स, झारखण्ड

(प्रथम अंशिका)

किसी भी कौम में मानव अधिकार की हैसियत रीढ़ की हड्डी जैसी होती है जिस कौम में मानव अधिकार का पास और ख्याल नहीं रखा जाता तो वह कौम अत्याचार, हिंसा, पथभ्रष्टता, अनारकी और असमाजिक तत्वों का अशिकार होकर रह जाती है जिसके कारण, लूट खिसोट, कत्ल, डाका, जुवा बाजी, शराबनोशी, नारियों पर अत्याचार आदि अपराध ा साधारण होने लगते हैं।

इस्लाम में मानवीय अधिकार की सुरक्षा पर काफी बल दिया गया है मानवअधिकार को वरियता प्राप्त है। बड़े से बड़ा पाप अल्लाह तआला तो बख्श सकता है लेकिन बन्दे के मामूली अधिकार के बारे में बहुत सख्त है इस एतबार से इन्सान चाहे वह किसी भी रंग व नस्ल का हो, किसी कबीले और कौम का हो, स्वामी हो या गुलाम, राजा हो या प्रजा, बहुमत में हो या अल्पसंख्यक में, मर्द हो या औरत, बेटा हो या बेटी, मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम भाई इन्सान होने के कारण सब का अधिकार समान हैं।

इन्सान की जान की सुरक्षाः

इस्लाम में इन्सान के जान, माल की सुरक्षा पर काफी बल दिया गया है क्योंकि इन्सान चाहे किसी भी रंग व नस्ल कबीले और देश का वासी हो उसकी जान, और इज्ज़त सुरक्षित हैं इस्लाम एक इन्सान की हत्या को पूरी मानवता की हत्या के समान करार देता है और मानव अधिकार के हनन को पसन्द नहीं करता है और हर हालत में मानव अधि ाकार, इन्सान की जान की सुरक्षा और पासदारी की गारन्टी देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फ़साद मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले उसने गोया तमाम लेागों को जिन्दा कर दिया''। (सूरे माइदा-३२)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अधिकार

इस्लाम में शिक्षा प्राप्त करने पर काफी बल दिया गया है ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० पर प्रथम वह्य (प्रकाशना) सूरे अलक अवतरित हुयी जिसमें पढ़ने का आदेश है। इस्लाम में हर इन्सान को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। इसमें बड़े, छोटे, काले गोरे मर्द, औरत में किसी भी प्रकार का कोई भेद भाव और किसी प्रकार की कोई रूकावट नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''बताओ तो जो ज्ञान रखते हैं और जो लोग

ज्ञान नहीं रखते सब बराबर हो सकते हैं नसीहत तो केवल अकलमन्द ही लोग कुबूल करते हैं। '' (सूरे जुमर-९)

इस्लाम में नारी-अधिकार

इस्लाम हर व्यक्ति चाहे वह मर्द हो या औरत उसकी इज्जत और प्रतिष्ठा की गारन्टी देता है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के ईश्दूत बनाये जाने से पहले समाज में औरतों का सम्मान नहीं था बेटी की हैसियत से कब्र में ज़िन्दा दफन कर दी जाती थी और बहैसियत बीवी जुवा में हारी जाती थी, औरतों पर पर अश्लील कविताएं पढ़ते थे। हज़रत मुहम्मद को ईश्दूत बनाये जाने के बाद इसालम ने औरतों को बाबर्कत और संसार की कीमती हस्ती करार दिया, उनके लिये जीवन के हर विभाग में अधिकार तय किये गये और उनको दुख पहुंचाने का समाज के लिये खराबी बयान किया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को दुख पहुंचाएं जबकि उन्होंने कोई अपराध न किया हो तो निसन्देह उन लोगों ने बोहतान (झूठा आरोप) और खुले पाप का बोझ उठाया (सूरे अहजाब-५८)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की वाणी है जो नारी अधिकार के बारे में है। हजरत मुआविया बिन हीदा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से पूछा हम में से किसी की बीवी का उस पर (अपने पति पर) क्या अधिकार है तो ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तू खाये तो उसे खिलाये जब तू लिाबास (कपड़ा) पहने तो उसे भी पहनाये (अर्थात उसके लिये भी कपड़े तैयार करवाये) और उसके चेहरे पर मत मार न उसे बुरा भला या बदसूरत कहे।

मातपा पिता के अधिकार

मां बाप अपने बच्चों का लाड प्यार से लालन पालन करते हैं, बच्चे की शिक्षा दीक्षा करके बड़ा करते हैं और रोजी रोटी हासिल करने के लिये सामान का प्रबन्ध करते हैं इसी तरह बच्चों पर अनिवार्य है कि अपने मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करें, बुढ़ापे में उल्टा सीधा वक्या बोल दें तो उनको उफ तक न कहें और अपने कर्तव्य को भली भांति पूरा करें। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और हम ने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की नसीहत की है'' (सूरे अंकबूत-८)

हज़रत अबू हुरैरह बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद (धूल ध ूसरित) हो उस शख्स की नाक ध ूल धूसरित हो उस शख्स की नाक धूल धूसरित हो जिसने बुढ़ापे में अपने मां बाप को पाया उनमें से एक को या दोनों को और फिर (भी उनकी सेवा) करके स्वर्ग में नहीं गया। (बुखारी, मुस्लिम)

रिश्तेदारों के अधिकार

रिश्तेदारों से बेहतर बर्ताव एवं व्यवहार करके ही एक बेहतरीन

समाज को वजूद (स्तित्व) में लाया जा सकता है। रिश्तेदारों के साथ प्रेम की भावना होनी चाहिये न कि तनाव और दुश्मनी का, एक बेहतर इन्सान के लिये जरूरी है कि अगर उनके रिश्तेदार रिश्ता नाता न जोड़ें तब भी उनके साथ गलत व्यवहार न करें कयोंकि इस्लाम में दुर्व्यवहार और मानव अधिकार के हनन की कोई गुजाइश नहीं है हर हाल और हर सूरत में मआफ करने सब्र और शुक्रगुज़ारी का जजबा रखना एक अच्छे इन्सान की पहचान है। कुरआन और हदीस से यह साबित है कि रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार हर हाल में वाजिब है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: ''बेशक अल्लाह तआला रिश्तेदारों के साथ अद्ल व एहसान (न्याय एवं भलाई) करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों, असभ्य हरकतों और जुल्म व ज्यादती से रोकता है वह स्वयं तुम्हें नसीहतें कर रहा है कि तुम नसीहत हासिल करो''। (सूरे नह्ल-९०)

हज़रत अनस रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स को यह बात पसन्द है कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी हो और उसकी उम्र में ताखीर (इज़ाफ़ा) किया जाये तो उसे चाहिये कि वह रिश्तेनाते को जोड़े रखे-जारी

(जरीदा तर्जुमान, पाक्षिक १६-२८-२०१८)

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

हमेशा अपने दिल को नमाज़ से जोड़े रखो

मुहम्मद अजहर मदनी

हजरत अबू हुरैरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया फरिश्ते तुम में से किसी भी आदमी के लिये उस वक्त तक दुआ करते रहते हैं ''ऐ अल्लाह उसको बख्श दे, ऐ अल्लाह उस पर दया कर जब तक वह आदमी उस जगह पर बैठा रहे जहां उसने नमाज़ पढ़ी है और बे वजू न हुआ, तुम में से वह आदमी जो केवल नमाज़ के लिये रूका हुआ हो और उसको घर जाने से कोई चीज न रोकने वाली हो सिवाय नमाज के तो उस इंतेजार का पूरा वक्त नमाज़ में शुमार होगा''। (सहीह बुखारी ६०५)

नमाज़ इस्लाम का दूसरा बुनियादी स्तंभ है, स्वर्ग की प्राप्ति का माध्यम और नरक से बचाने वाली है, अच्छाई की प्ररेणा देती है और बुराइयों को खत्म करने वाली है। नमाज़ के सवाब में उस वक़्त और ज्यादा बढ़ोतरी कर दी जाती है जब इन्सान उसको अदा करने में अत्यंत रूचि रखता है और उसकी ताक में लगा रहता है। अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सात प्रकार के ऐसे लोग होंगे जिनको अल्लाह अपना विशेष छाया प्रदान करेगा जिस दिन उसकी छाया के अलावा कोई दूसरा छाया नहीं होगा। उन सात सौभाग्यशाली लोगों में एक वह इन्सान भी होगा जिसका दिल मस्जिद से हर वक्त लगा रहता है। (बुखारी) इस हदीस में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि अगर कोई शख्स हमेशा नमाज़ में दिल लगाये रहता है, एक फर्ज नमाज़ अदा करने के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तेजार में अपनी नमाज़ की जगह पर बैठा रहता है तो ऐसे शख्स के इन्तेज़ार की घड़ी का सवाब नमाज़ के ही सवाब के बराबर होगा। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में बैठ कर दूसरी नमाज़ का बावजू होकर इन्तेजार करने की प्ररेणा दिलायी है, रब की रहमतों और उसकी नेमतों का पात्र करार दिया।

हज़रत अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो शख्स मस्जिद में सुबह और शाम बार बार हाजिर होता है अल्लाह तआला ऐसे शख्स की जन्नत में मेहमानी का सामान करेगा वह सुबह शाम जब भी मस्जिद में जाये (बुखारी ६६१) हज़रत अनस रजिअल्लाहो तआला अन्हो से पूछा गया कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई अंगूठी पहनी है। उन्होंने फरमाया हां एक रात इशा की नमाज़ आधी रात तक विलंबित कर दिया फिर नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ के बाद हमारी तरफ रूख करके फरमाया कि लोग नमाज़ पढ़ कर सो गये और तुम जबसे नमाज़ का इन्तेजार कर रहे हो उस समय से लेकर बरार नमाज़ की हालत में हो।

इन हदीसों से मालूम हुआ कि बावजू होकर नमाज़ के इन्तेजार में रहने की बड़ी श्रेष्ठता है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें नमाज़ का पाबन्द बनाये।

❑ ❑ ❑

पड़ोसी के अधिकार

अबू उबैदुल्लाह

इस्लाम एक संपूर्ण और विश्वव्यापी धर्म है और मानवता की सुरक्षा की गारन्टी देता है इसी मानव सुरक्षा के कारण इस्लाम अपने अनुयाइयों पर एक दूसरे पर कुछ अधिकार लागू करता है इन्हीं अधिकारों को अदा करने के बाद दुनिया और परलय में सफलता प्राप्त कर सकता है, इन अधिकारों को नजर अंदाज करते हुये अगर कोई चाहता है कि वह दुनिया और परलय दोनों में सफल हो जाये गा तो यह उसकी गलतफहमी होगी। इन्हीं अधिकारों में से एक अधिकार पड़ोसी का भी है।

बन्दों के अधिकार में पड़ोसी को वरीयता प्राप्त है जिसमें केवल मुसलमान और रिश्तेदार ही नहीं बल्कि आस पास में रहने वाले सब पड़ोसी चाहे वह किसी भी वर्ग से संबन्ध रखता हो, उसका भी अधिकार है। इस्लाम ने पड़ोसी का हक अदा करने को इतनी अहमियत दी है कि इसको अल्लाह औरउसके ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से मुहब्बत का प्रतीक करार दिया है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसे यह पसन्द हो कि वह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करे या अल्लाह और उसके रसूल उसे पसन्द करें तो उसे चाहिये कि जब वह बात करे तो सच्ची बात करे और जब उस के पास कोई एमानत रखी जाये तो वह उसको अदा करे और अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करे।

अबू शुरैह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया अल्लाह की कसम वह शख्स मोमिन (मुसलमान) नहीं हो सकता, अल्लाह की कसम वह शख्स (मुसलमान) नहीं हो सकता, अल्लाह की क़सम वह शख्स मुसलमान नहीं हो सकता पूछा गया ऐ अल्लाह के संदेशवाहक कौन मुसलमान नहीं हो सकता फरमायाः जिस का पड़ोसी उसकी दुष्टता से महफूज न हो। (सहीह बुखारी) अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि वह शख्स मुसलमान नहीं जो स्वयं पेट भर कर खाना खाये और उसका पड़ोसी भूखा रहे। इस्लाम ने पड़ोसी का इतना ख्याल रखने का आदेश दिया है कि जब कोई अपने घर में सालन बनाये तो उसमें पानी ज्यादा मिला दे ताकि पड़ोसी को भी दिया जा सके। सहाबी हज़रत अबू जर रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० ने फ़रमाया कि अबू ज़र जब तुम सालन बनाओ तो उसमें पानी को ज्यादा कर लो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (सहीह मुस्लिम) इन तमाम हदीसों से स्पष्ट होता है कि पड़ोसी के साथ अच्छे व्यवहार की कितनी महत्ता है अल्लाह तआला हम सबको पड़ोसी के अधिकार को समझने की क्षमता दे और दुनिया और आखिरत में मुक्ति का माध्यम बनाये।

❑ ❑ ❑

दिखावा महा पाप

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद जहबी रह०

कुरआन में मुनाफिकों का हाल बताते हुये अल्लाह ने फरमायाः ''लोगों को दिखलाते हैं और अल्लाह को कम ही याद करते हैं'' (सूरे निसा-१४२) कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''उन नमाजियों के लिये वैल और हिलाकत है जो अपनी नमाजों से गफलत बरतते हैं और दिखलाते हैं और बरतने की चीजों से रोकते हैं'' (सूरे माऊन ७) कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''जो शख्स अपने रब से मुलाकात की उम्मीद रखता है उसे नेक अमल करना चाहिये और अपने रब की इबादत में अल्लाह के अलावा को शरीक नहीं करना चाहिये (अर्थात अमल में दिखावा नहीं करना चाहिये) (सूरे कहफ-११०)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने अल्लाह को सुनाया, अल्लाह उसे सुनायेगा, जो दिखावा करेगा अल्लाह उसका मकसद पूरा करेगा। (बुखारी, मुस्लिम, तबरानी कबीर, बैहक़ी, मुसनद अहमद)

खत्ताबी ने कहा कि इस हदीस का अर्थ यह है कि जिसके काम में निस्वार्थ नहीं रहेगा औरउसका मकसद यह हो गा कि लोगों को खूब दिखलाये और सुनाये तो उसे ऐसा ही बदला दिया जायेगा और जिस चीज़ को वह छुपाता था उसे जाहिर कर दिया जायेगा और इससे उसको खुशी होगी।

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया थोड़ा दिखावा भी शिर्क है। हाफिज और तबरानी ने मआज़ से नकल किया है। (इराकी)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः तुम्हारे बारे में सबसे ज्यादा झूठे शिर्क से डरता हूं। पूछा गया ऐ ईश्दूत वह क्या है? फरमाया दिखावा (रिया) जिस दिन बन्दों को उनके कर्मों का बदला दिया जायेगा, अल्लाह तआला फरमायेगा जिनको तुम अपने कर्म दिखाते थे उनके पास जाओ और देखो क्या वह तुम्हें इसका बदला दे सकते हैं। (मुस्नद अहमद, बैहकी, तबरानी)

और अल्लाह के इस कथन के बारे में कहा गया ''और जाहिर हुआ उनके लिये अल्लाह की जानिब से वह मामला जिसका वह गुमान न करते थे दुनिया में वह ऐसे काम करते थे जिनके बारे में उनका गुमान होता था कि यह अच्छे काम हैं लेकिन महा परलय में वह बुरे साबित होंगे''। सलफ में से बाज लोग जब यह आयत ''व-ब-दआ लहुम मिनल्लाहि, मालम यकूनू यह तसिबून'' तिलावत करते थे तो कहते थे ''वैलुन लि अहलिर रिया'' अर्थात दिखावा करने वालों की ताबही है। यह भी बयान हुआ है कि दिखावा करने वाला परलय के दिन चार नामों से पुकारा जायेगा, ऐ रियाकार, ऐ वे वफा, ऐ बदकार, ऐ टूटे में पड़ने वाले, जा जिन के लिये तूने ने किया है उनसे अपना बदला ले ले हमारे पास तेरे लिये कोई बदला नहीं है (इब्ने अबिद दुनिया ने जबला यहसबी से उन्होंने एक सहाबी से रिवायत किया जिसका नाम नहीं लिया इस की सनद जईफ है। (इराकी) हसन ने फरमायाः दिखावा करने वाला

अल्लाह की तकदीर पर गालिब आना चाहता है वह बुरा आदमी है वह चाहता है कि लोग कहें कि वह नेक है जब कि अल्लाह की जानिब से वह खराब लोगों में से है अतः ज़रूरी है कि मोमिनों की बुद्धिमत्ता से वह छिपा न रहे। क़तादा फरमाते हैं कि जब कोई आदमी दिखावा (रियाकारी) करता है तो अल्लाह तआला फरमाता है कि इस बन्दे को देखो कैसा मेरे साथ मज़ाक करता है। एक रिवातय में आया है हज़रत उमर बिन खत्ताब रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने एक आदमी को देखा जो अपनी गर्दन झुकाये हुये था, फरमाया ऐ गर्दन वाले अपनी गर्दन सीधी करो अल्लाह का डर गर्दन में नहीं बल्कि दिल में होता है।

रिवायत है कि हज़रत अबू उमामा बाहिली मस्जिद में एक आदमी के पास आये जो सजदे में था और रो रो कर दुआएं कर रहा था हज़रत अबू उमामा ने उससे कहां तू और यहां यह काम तेरे घर में होता तो बेहतर था।

हज़रत अली बिन अबू तालिब रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया दिखलावा करने वाले के तीन लक्षण (पहचान) हैं।

१. जब अकेला होता है तो सुसती करता है जब लोगों में होता है तो चुस्त होता है। २. जब उसकी तारीफ की जाये तो ज्यादा काम करता है। ३. और जब उसकी निंदा की जाये तो ढील दे देता है।

फुजैल बिन अयाज रह० ने फरमाया लोगों के कर्म को छोड़ देना रियाकारी (दिखावा) है और लोगों के लिये कर्म करना शिर्क है और इख्लास (निःस्वार्थ) यह है कि अल्लाह तुम्हें इन दोनों चीज़ों से सुरक्षित रखे। अल्लाह तआला हमें करनी, कथनी में निस्वार्थ (इख्लास अर्थात सच्चे मन से नेक काम करने) की क्षमता दे निसन्देह वह बड़ा दानवीर और करीम (कृपालु) है।

नसीहतः अल्लाह के बन्दों तुम्हारी उम्र के दिन थोड़े हैं और नसीहत दो टूक है बाद वाले पहले वालों से नसीहत पकड़ें, काफिले के रवाना होने से पहले ऐ गाफिल बेदार हो जा। अफसोस है उस नादान और गाफिल इन्सान पर जिसे ने बुढ़ापे पर गुनाहों का बोझ डाल लिया जवानी का समय बर्बाद कर दिया और झूठी इच्छाओं की तरफ झुक पड़ा बड़ी बड़ी इमारतें, शरण स्थल बनाता है और अपनी कब्र की याद से गाफिल है फिर भी दावा है कि वह अकलमन्द है। अल्लाह की सौगन्ध, कितने शक्तिशाली लोगों ने उच्च गंतव्य तय कर लिये वह अभी उनकी तरह कामयाबी की उम्मीद में है हरगिज नहीं गलत करतूत के सहारे कोई भी असत्यवादी कामयाब नहीं होगा।

एक अरबी कवि कहता हैः

अर्थः ऐ हवेलियों और महल्ला पर फ़ख़्र करने वाले, यह दुनिया अल्लाह के सामने खड़े होने और विवश्ता जाहिर करने के लिये है, कल तुझे ऐसे घर में ठेहरना है जिसे बहुत तंग बनाया गया है, ऐसे लोगों के दर्मियान खामूश है और अपनी खामूशी में बोल रहे हैं, इसलिये दुनिया में तन के कपड़े और थोड़ी रोज़ी पर राजी हो जा, और ऐसा अस्थिर घर बना जो मकड़ी के जाले के समान हो। (अर्थात इस दुनिया में हमेशा नहीं रहना है एक दिन यहां से जाना है) फिर कह ऐ नफ्स यह तेरे ठेहरने की जगह है फिर मौत है। (किताबुल कबाइर पृष्ठ २३७-२४३)

❑ ❑ ❑

३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स

शीर्षक: "विश्व शान्ति और मानवता की सुरक्षा"

देहली चले चलो सब, देहली चले चलो सब

मुहम्मद इब्राहीम सज्जाद तैमी

ईमान की जिया से, रोशन जीमर करलें
कब से फकीर है दिल, उसको अमीर कर लें
कुरआन के पयामे[1] अम्न व अमां को बढ़कर
मेहमाने दिल बना लें, दिल में असीर[2] कर लें
सबको पुकारती है इंसानियत उठो सब
देहली चले चलो सब, देहली चले चलो सब

मैदाने राम लीला, आवाज दे रहा है
अल्लाह की जमीं पर, शैतान नाचता है
दहशतगर्दी से आलम[3], हर लहजा[4] कांपता है
इफरीते खौफ व वहशत[6], दुनिया निगल चला है
ताखीर हो न जाये, दौड़ो उठो बढ़ो सब
देहली चले चलो सब, देहली चले चलो सब

असगर ने है बुलाया, हारून ने पुकारा
रफतारे वक्त की तुम उठ कर बदले दो धारा
समझा दो इस जहां[7] को, अब वक्त का इशारा
दिया[8] का एक ही बस इस्लाम है सहारा
आवाज वक्त की यह, चल कर जरा सुनो सब
देहली चले चलो सब, देहली चले चलो सब

टूटे हुये दिलों को, फिर जोड़ना है हम को
तूफाने वक्त का रूख फिर मोड़ना है हम को
दहशत[9] के नाग का फन, फिर तोड़ना है हमको
रोता हुआ किसी को, न छोड़ना है हमको

इक बार अम्न[10] का फिर दीपक बने चलो सब
देहली चले चलो सब, देहली चले चलो सब

यह कांफ्रेन्स यारब! तू कामयाब कर दे
जुमलत[11] है रोशनी को फिर फतेहयाब कर दे
उम्मत के दुश्मनों को, तू लाजवाब कर दे
सज्जाद की दुआ पर ये मेहरे[12] शेताब[13] कर दे

वहदत[14] का ले के परचम[15], आगे चलो बढ़ो सब
देहली चले चलो सब, देहली चले चलो सब

शब्द	अर्थ
१. पयाम	सन्देश
२. असीर	कैद करना-बसाना
३. आलम	संसार
४. लहजा	क्षण, पल
५. इफरीत	शैतान
६. वहशत	भय
७. जहां	संसार
८. दिया	दीपक, चिराग
९. दहशत	आतंक
१०. अम्न	शान्ति
११. जुलमत	अंधेरा
१२. मेह्र	मेहरबानी
१३. शेताब	जल्द, तुरन्त
१४. वहदत	एकता
१५. परचम	झण्डा

३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स

शीर्षक: "विश्व शान्ति और मानवता की सुरक्षा"

सूए देहली चलो मुस्कुराते चलो

सालिक बस्तवी

शमए दीने हुदा को जलाते चलो
शिर्क व बिदअत की दीवार ढाते चलो
जोत हुसने अमल[1] की जगाते चलो
जामे तौहीद व सुन्नत पिलाते चलो
अमने आलम[2] की मश्अल[3] जलाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो

पंज-ए-जुल्म व तागूत[4] को मोड़ दो
बुग्ज़ व नफरत की दीवार को तोड़ दो
दहरियत के छलके सुबू तोड़ दो
आंख दिखलाये बातिल[5] तो सर फोड़ दो
अज्मे[6] कामिल के जौहर दिखाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो

काबिले हम्द[7] है वह निराला खुदा
जिस की मुटठी में है नजमे[8] अर्ज[9] व समा[10]
जो दिखाए हैं महबूबे रब्बे अला
है वही रास्ता बागे फिर्दौस का
हुस्ने कुरआं के नगमें सुनाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो

लेके दीने हनीफ का तेग व तबर
काट दो काट दो आजरी की कमर
जिस को हँस के सजाये हैं खौरूल बशर
इस डगर पर चलो साथियों झूम कर
शमए दीने हुदा को जलाते चलो
राहे सुन्नत की वक्अत बढ़ाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो

तुम मुवह्हिद हो हाजत रवा है खुदा
सिर्फ रब्बे दो आलम है मुश्किल कुशा[12]
जिसके सीने में है नूर[13] ईमान का

सरफराजी[14] का जलवा है इस पर फिदा
आखिरत का तराना सुनाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो
तुम सजाते रहो दीन की रहगुजर
उस्वए[15] मुस्तफा पर फिदा हो नजर
फिकरे मिल्लत रहे तुम को शाम व सहर
मंजिले इरतेका पर चलो झूम कर
दर्से[16] असलाफ मन में बसाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो
शादमां[17] शादमां कामरां कामरां[18]
सूए मंजिल रवाना हुआ कारवां
लाके अहबाब का देखो अज्मे जवां
इस जमाअत के बन जाओ तुम कद्र दां
जामे तसनीमे कौसर लुढाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो
अपनी मंजिल की जानिब बढ़ाओ कदम
फूंक दो फूंक दो खार जारे सितम
लेके तौहीद व सुन्नत का सालिक अलम[19]
शौक से तुम सुनाओ नवाए हरम
फितनए दहरियत को दबाते चलो
सूऐ देहली चलो मुस्कुराते चलो

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
१. हुस्ने अमल	सत्कर्म	११. आजरी	असत्य
२. आलम	विश्व	१२. मुश्किल कुशा	संकट मोचक
३. मश्अल	चिराग	१३. नूर	रोशनी
४. तागूत	असत्य	१४. सरफराजी	कामयाबी
५. बातिल	असत्य	१५. उसवा	आदर्श
६. अज्म	संकल्प	१६. दर्स	पाठ
७. काबिलेहम्द	प्रशंसनीय	१७. शादमां	प्रफुल्लित
८. नज्म	व्यवस्था	१८. कामरां	सफल
९. अर्ज	धरती	१९. अलम	झण्डा
१०. समा	आकाश		

राष्ट्रीय सदभावना और मरीज़ों की देख भाल

अब्दुल हकीम मदनी, मुंबई

इस्लाम दया और करूणा वाला धर्म है। समाज के तमाम वर्गों के लिये बिना भेदभाव इसकी दयालुता साधारण है, मर्दों से लकर औरतों तक, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, गरीबों से लेकर अमीरों तक, सब के लिये इस्लाम धर्म के सिद्धांत मौजूद हैं। इस्लाम धर्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन वर्गों के बीच प्रेम, सौहार्द, और प्रेम भाव स्थापित करने का हुक्म देता है और उन तमाम दर्वाजों को बन्द करने का आदेश देता है जहां से पक्षपात, रंग, वंश की बुनियाद पर भेदभाव और नफरत की बू आती है। इस्लाम में न तो धार्मिक हिंसा की गुनजाइश है न ही समाजी एतबार से किसी भी इन्सान पर मामूली अत्याचार वैध है और न ही अल्लाह के बन्दों के बीच वंशीय, क्षेत्रीय, भाषीय, राष्ट्रीय भेदभाव वैध है। हर तरफ न्याय और प्रेम की शिक्षा है और एक दूसरे के साथ हमदर्दी और सौहार्द की स्थापना का आदेश है। इस्लाम धर्म के विश्वव्यापी होने की जहां बेशुमार मिसालें मौजूद हैं वहीं समाज के मजलूमों, कमजोरों, गरीबों के साथ साथ बीमारों के साथ भलाई का व्यवहार करने और उनका हालचाल मालूम (इयादत, बीमारपुर्सी) करने की उच्च शिक्षाएं भी मौजूद हैं।

इस्लाम ने समाज में बीमारी और परेशानी में लिप्त लोगों का हाल चाल मालूम करने का हुक्म दिया है ताकि इन बीमारों का बोझ और उनका दुख कम हो सके। एक अवसर पर ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः भूखे को खाना खिलाओ, कैदियों को आजाद करो, बीमार को सांत्वना दो (सहीह बुखारी ५३७३)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो मरीज की इयादत (सांत्वना) देता है वह बराबर जन्नत के बागों में रहता है यहां तक कि लौट आये। (सहीह मुस्लिम २५६८)

एक दूसरी हदीस में है कि जिसने अल्लाह की खुशी के लिये किसी मरीज़ की इयादत (सांत्वना) दिया या अपने भाई की इयादत की तो एक फरिश्ता उसे आवाज़ देता है कि तू खुश हो जा तेरा चलना मुबारक हो और तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया। (सुनन तिर्मिज़ी हदीस न० २००८-हसन) ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमायाः जो भी मुसलमान सुबह के वक्त किसी रोगी की इयादत (हाल चाल मालूम करने) जाता है तो उस पर शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते रहमत की दुआ करते हैं और अगर शाम को इयादत करता है तो सुबह तक इतने ही फरिश्ते दुआ करते हैं और उसके लिये जन्नत में एक बाग हो। (सुनन तिर्मिज़ी ९६९-इस हदीस की सनद सहीह है)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया कि क्यामत के दिन अल्लाह तआला कहेगा कि ऐ आदम की औलाद मैं बीमार हुआ तो तुमने मेरी इयादत नहीं की तो वह बन्दा कहेगा कि ऐ अल्लाह तू तो पूरे संसार का पालनहार है मैं कैसे तेरी इयादत करता तो अल्लाह तआला कहेगा कि क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरा अमुक बन्दा बीमार हुआ तो तुमने उसकी इदायत नहीं की क्या तुझे मालूम नहीं कि अगर तू उस बन्दे

की इयादत के लिये जाता तो तू मुझे वहां पाता। (सहीह मुस्लिम ६६४८१) राष्ट्रीय सदभावना और सौहार्द के तौर पर अन्य समुदाय के बीमार लोगों की इयादत (सांत्वना) दिया जा सकता है। इस्लामी कानून ने मानवता के इन तमाम कामों को पुण्य का कार्य बताया है जिसमें अल्लाह के बन्दों के लिये कहीं न कहीं हमदर्दी और प्रेम की भावना निहित है। स्वयं ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० अपने एक यहूदी सेवक के बीमार होने पर उसके स्वास्थ के बारे में जानकारी लेने और उसे सांत्वना देने के लिये उसके घर गये (बुखारी १३५६१ हदीस का आंशिक भाग) चचा अबू तालिब की बीमारी और उनके निधन के अवसर पर ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० स्वयं गये और उन्हें इस्लाम की तरफ आमंत्रित किया, इसी प्रकार ईश्दूत के प्यारे साथियों (सहाबा किराम) से भी गैर मुस्लिम भाइयों के बीमार होने के अवसर पर उनका हाल चाल मालूम करने का सुबूत मिलता है। हज़रत अबू दर्दा रजिअल्लाहो तआला अन्हो अपने एक पड़ोसी यहूदी के इयादत (बीमार होने पर उसका हाल चाल मालूम) करने के लिये जाया करते थे (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा १९२७१)

प्रसिद्ध टीकाकार हाफिज़ इब्ने हजर रह० ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की यहूदी सेवक की इयादत वाली रिवायत (हदीस वाणी) की व्याख्या में लिखते हैं कि इस हदीस से साबित होता है कि गैर मुस्लिम भाई से सेवा ली जा सकती है और गैर मुस्लिम सेवक के बीमार होने पर उसकी बीमारपुर्सी करना वैध है और इसी प्रकार से वादे को अच्छी तरह निभाने का भी सुबूत है। इस्लाम जगत के प्रसिद्ध सलफी विद्वान अल्लामा इब्ने उसैमीन रह० एक प्रश्न के उत्तर में लिखते हैं कि यहूदी या गैर मुस्लिम की इयादत से अगर कोई इस्लामी उददेश्य है तो यह एक सत्कर्म है या इसी प्रकार गैर मुस्लिम पड़ोसी है या उससे किसी प्रकार का संबन्ध है तो उसकी इयादत करना जायज है, इसमें कोई हर्ज नहीं है (फतावा नूरून अलद दर्ब, कैसेट न० १२९५) मालूम हुआ कि मुसलमान हो या गैर मुस्लिम अपना हो या पराया, हर एक की इयादत करना उसकी बीमारपुर्सी करना और जरूरत पड़ने पर उसका सहयोग करना न केवल इस्लाम का आदेश है बल्कि यह एक मानवीय और नैतिक कर्म है जिस की इस्लाम ने प्ररेणा दी है और स्वयं ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०व०स० ने इस पर अमल करके उम्मत के लिये एक उत्तम आदर्श दिया है। इस्लाम दया एवं करूणा का धर्म है, मानवता एवं शालीनता का वाहक है। सौहार्द, उपकार उसके बुनियादी सिद्वांत हैं। नफरत की भावनाओं को भड़काने और इसी प्रकार से किसी भी तरह का ऐसा कोई भी कर्म जो मानवता के लिये हानिकारक हो और समाज में उपद्रव और बर्बादी का माध्यम बनता हो, इस्लाम ने न तो इस प्रकार की शिक्षा दी है और न ही किसी प्रकार से इसका समर्थन करता है बल्कि अगर देखा जाये तो इस प्रकार के सभी कर्म और करतूत को जो मानवता विरोधी हैं, इस्लाम ने उन्हें हराम करार दिया है और मुसलमानों को इससे मना किया है। इस लिये मुसलमानों को चाहिये कि इस्लाम की शिक्षाओं को अपनायें और जीवन में व्यवहारिक तौर पर इसे लागू करें और अधि ाक से अधिक उसे साधारण करें। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें इस्लाम की मानवता वादी शिक्षाओं पर चलने की क्षमता प्रदान करे।

(जरीदा तर्जुमान १६-३१ मार्च २०१७ प्रकाशक मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फरिश्ते तुम में से किसी को भी दुआ देते हैं जब तक कि वह अपने नमाज़ पढ़ने की जगह में बैठा रहे और यह सिलसिला उस वक्त तक बाकी रहता है जब तक कि उसको तहारत की ज़रूरत न पड़ जाये फरिश्ते कहते हैं ऐ अल्लाह उसकी मगफिरत फरमा और उस पर रहम कर। (बुखारी)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः टख़नों से नीचे तहबन्द का जो हिस्सा लटका हुआ होगा वह जहन्नम में जाने का सबब होगा। (बुख़ारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला

अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः बेशक अल्लाह बन्दे से खुश रहता है क्योंकि वह खाता है तो इस पर अल्लाह की हम्द बयान करता है और पानी पीता है तो इस पर भी अल्लाह की हम्द बयान करता है। (मुस्लिम)

अनस रजिअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः तुम में से कोई उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके बाप से उसकी औलाद से और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न बन जाऊं। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान मुसलमान का भाई है न वह जुल्म करता है और न उसको दुख पहुंचाता है जो अपने भाई की जरूरत का ख्याल रखता है अल्लाह उसकी जरूरत पूरी करता है और जिसने किसी मुसलमान की किसी परेशानी को दूर कर दिया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसकी परेशानी में से किसी परेशानी को दूर कर देगा और जिसने किसी मुसलमान के ऐब को छुपाया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसके ऐब को छुपाये गा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे दोनों कनधों को पकड़ा और कहा तुम इस दुनिया में मुसाफिर या रास्ता पार करने वाले की तरह रहो। (बुखारी)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुल्म क्यामत के दिन अंधेरे का सबब बनेगा। (बुखारी)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः हर बन्दा अपने कर्म के अनुसार उठाया जाये गा। (मुस्लिम)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाज़ बीवियां बयान करती हैं आपने फरमायाः जो किसी अर्राफ (भविश्य या गैब की बातें बताने वाला) के पास गया और उसने किसी चीज़ के बारे में पूछा तो उसकी चालीस रातों की नमाज़ कुबूल नहीं होगी। (मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वाले को दिया जायेगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जिस ने रात में सूरे बक़रा की आखिरी दो आयतें पढ़ीं यह उसके लिये काफी हो जायें गी। (बुखारी)

❑ ❑ ❑

कुरआन को पढ़ने और समझने के साथ अमल भी जरूरी

एन.अहमद

ज्ञान और कर्म का एक दूसरे से बड़ा गहरा संबन्ध है, ज्ञान इस लिये हासिल किया जाता है कि ज्ञान हासिल करने के बाद उस पर अमल भी किया जाये लेकिन सहीह ज्ञान और गलत ज्ञान में अन्तर करना भी जरूरी है। इस संसार के सृष्टा को समझने के लिये दुनिया की बहुत सी सृष्टि है जिनके बारे में गौर फिक्र करके हम यह जान सकते हैं कि कोई न कोई हस्ती है जो इस दुनिया को चला रही है, एक मिसाल रात और दिन की है। मामूल के अनुसार रात आती है और चली जाती है इसी प्रकार दिन होने के बाद उसका भी रूटीन चैन्ज हो जाता है, यह सिलसिला हमें यह बताता है कि दुनिया का एक स्वामी है जो इस संसार को भली भांति चला रहा है। सूरज और चांद की मिसाल भी हमारे सामने है इन दोनों मखलूक के बारे में भी इन्सान गहराई के साथ गौर फिक्र करे तो उसे एक हकीकत तक पहुंचने में मदद मिलेगी।

कोई भी ज्ञान प्राप्त करने के बाद हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि जो ज्ञान हमने हासिल किया है वह हम इन्सानों के लिये कितना लाभदायक है और कितना हानिकारक, अर्थात एक ज्ञान इन्सान को लाभ पहुंचाता है और एक ज्ञान नुकसान। नुकसान पहुंचाने का अर्थ यह है कि इनसान ज्ञान का गलत स्तेमाल न करे और ऐसे ज्ञान की तलाश में रहे जो उसे मरने के बाद भी फायदा पहुंचाये। अगर ज्ञान हासिल किया जाये और उस पर अमल न किया जाये तो ज्ञान की रोशनी धीरे धीरे खत्म हो जाती है। एक अवसर पर ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया ऐसा उस वक्त हो गा जब ज्ञान खत्म हो जायेगा। ईश्दूत की जुबान से इल्म के अन्त होने की बात सुनकर एक सहाबी जियाद बिन लुबैद अन्सारी ने आश्चर्य से पूछा कि ऐ अल्लाह के सन्देष्टा हमने कुरआन पढ़ा, इसे अपनी औलाद को पढ़ाया, वह भी अपनी औलाद को पढ़ायें गे और यह सिलसिला बाकी रहेगा फिर ज्ञान के अन्त होने की शंका आप क्यों व्यक्त कर रहे हैं। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जियाद मैं तुम्हें मदीने का अकलमन्द (बुद्धिमान) आदमी समझता था क्या यहूदियों और ईसाइयों के पास तौरात और इंजील नहीं है? लेकिन क्या वह इन किताबों की शिक्षाओं और आदेशों से कुछ लाभ उठाते हैं।

इस हदीस से मालूम हुआ कि केवल किताब के पढ़ने और पढ़ाने से ज्ञान की सुरक्षा नहीं होगी इसके लिये ज़रूरी है कि किताब की शिक्षाओं पर अमल किया जाये।

अच्छा ज्ञान इन्सान को सफलता की ओर ले जाता है और अनर्थ ज्ञान इन्सान को असफलता की ओर ले जाता है। कुरआन हर इन्सान से अपील करता है कि वह दुनिया की चीजों पर गौर करे और अपने उस पालनहार को पहचानने की कोशिश करे जो इन्सान को ऐसा ज्ञान देता है जो उसको हर हाल में सफलता अर्थात स्वर्ग की तरफ ले जाता है। इसी लिये कुरआन अपने आप को सबसे पहले खूब अच्छी तरह से समझने का निमंत्रण करता है फिर अमल की दावत देता है।

❑ ❑ ❑